Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
https://www.srjis.com/issues_data/224
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, Nov-Dec, 2023, Vol- 12/80
https://doi.org/10.5281/zenodo.10444125

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

सरोज जोशी
शोधार्थी शिक्षासंकाय एस.एस.जे.कैम्पस, अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
sarojjoshi8066@gmail.com
डॉ रिजवाना सिद्दीकी
सहायक प्राध्यापक शिक्षा संकाय एस.एस.जे.कैम्पस, अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

Paper Received On: 25 Dec 2023
Peer Reviewed On: 28 Dec 2023
Published On: 01 Jan 2024

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।प्रतिदर्श का चयन स्तरीकृत याद्रच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया गया एवं प्रतिदर्श के रूप में यू•एस•नगर जिले के अंतर्गत 2 ब्लॉक (खटीमा एवं सितारगंज) के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 120 विद्यार्थियों (60 जनजाति एवं 60 गैर जनजाति) को शामिल किया गया है। आकड़ों के संकलन में मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु डॉ सुषमा तलेशरा तथा डॉ अक्तर बानों द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य स्केल का उपयोग किया गया है। अध्ययन में निष्कर्ष पाए गये कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है । माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य बिन्दु *– माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राएं, मानसिक स्वास्थ्य, जनजाति, गैर जनजाति ।*

प्रस्तावना – बालक के जन्म के बाद सम्पूर्ण जीवन में शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ हुए बिना अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता है। बालक के सर्वांगीण विकास के लिए मस्तिष्क का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालक के शिक्षा ग्रहण करने में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ है तो शिक्षा को अच्छे ढंग से ग्रहण कर सकेगा तथा किसी भी कार्य को करने में समर्थ होगा। लेकिन यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है तो वो शिक्षा को सही तरीके से ग्रहण नहीं कर पायेगा साथ ही उसकी शैक्षिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बधायें आयेंगी। मानसिक स्वास्थ्य का बालक की शैक्षिक आकांक्षा, अध्ययन आदत, लक्ष्यों आदि

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पर भी प्रभाव पड़ता है। बालक के समायोजन में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका रहती है। यदि बालक का व्यव्हार सभी विषय परिस्थितियों में एक सामान रहता है तो वह मानसिक रूप से स्वस्थ होगा लेकिन यदि बालक का व्यव्हार विषय परिस्थितियों में सामान नहीँ रहता है तो वह मानसिक रूप से अस्वस्थ होगा । मानसिक स्वास्थ्य का परिवार और समाज पर भी प्रभाव पड़ता है, जैसे किसी का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है तो वह व्यक्ति समाज व परिवार में प्रिय रहेगा । मानसिक स्वास्थ्य संवेगात्मक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यदि किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है तो उस व्यक्ति में संवेगात्मक स्थिरता अधिक होगी जिससे की व्यक्ति उचित व अनुचित का ज्ञान कर पाता है।कुछ विद्यार्थियों को कक्षा में सभी पसंद करते हैं क्योंकि उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है ,जिससे बालक में अध्ययन आदत ,रुचियों, बुद्धि आदि अच्छी होगी। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को जानना अत्यंत आवश्यक है । मानसिक स्वास्थ्य को जानकर विद्यार्थियों में शैक्षिक सफलता का निरन्तर विकास किया जा सकता है । सभी विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है तथा सभी का मानसिक स्वास्थ्य भी अलग–अलग होता है। शिक्षक के लिए मानसिक स्वास्थ्य को जानना नितांत आवश्यक है जिससे शिक्षक विद्यार्थियों को इस प्रकार से पठन–पठान कराए जिससे कि विद्यार्थी अधिकतम शैक्षिक प्रगति कर सके। अतः मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता के कारण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता – मानसिक स्वास्थ्य बालक के विकास को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता हैं जनजाति व गैर जनजाति के मानसिक स्वास्थ्य पर शोध इसलिए भी जरुरी है क्योंकि यह सभी बालकों के जीवन को कई रूपों से प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किस तरह प्रभावित होती है यह जानना भी इस शोध पत्र का विषय है जिससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हेतु उपयुक्त सुझाव दिए जा सकते हैं।

पदों का परिभाषिकरण –

माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राएं – माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं से तात्पर्य यू•एस•नगर जिले के खटीमा व सितारगंज ब्लॉक के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से है।

जनजाति – जनजाति से तात्पर्य व्यक्तियों के उस समूह से है, जो एक प्रजाति के हो ,जिनकी एक संस्कृति हो ,निश्चित भू– भाग में जनसंख्या में अपेक्षाकृत कम हो एवं एक स्थान पर निवास करते हो। प्रस्तुत अध्ययन में जनजाति के रूप में यू•एस•नगर के खटीमा व सितारगंज ब्लॉक में स्थित थारू जनजाति को लिया गया है।

गैर जनजाति – प्रस्तुत अध्ययन में गैर जनजाति से आशय यू.एस.नगर जिले के खटीमा व सितारगंज ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के सामान्य जाति, अन्य पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से है ।

मानसिक स्वास्थ्य –मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी भावना ,इच्छाओं ,महत्वकांक्षाओं और आदर्शों को वास्तविक धरातल तक सीमित रखने और अपने आपको अपने पर्यावरण के अनुसार ढ़ालने अथवा समायोजन करने की योग्यता है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं –

1–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

2–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

3–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

4–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालिकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन – प्रस्तुत अध्ययन को यू•एस•नगर जिले के खटीमा व सितारगंज ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 120 जनजाति व गैर जनजाति (60 जनजाति व 60 गैर जनजाति) विद्यार्थियों तक सिमित रखा गया है।

शोध अध्ययन विधि – प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या – प्रस्तुत शोध में यू•एस•नगर जिले के खटीमा ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 10 के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

प्रतिदर्श – प्रतिदर्श का चयन स्तरीकृत याद्रच्छिक प्रतिदर्शन विधि से खटीमा ब्लॉक में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 10 के 120 विद्यार्थियों { 60 जनजाति (30 बालक व 30 बालिका) एवं 60 गैर जनजाति (30 बालक व 30 बालिका)} का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध में प्रदतों के संकलन हेतु डॉ सुषमा तलेशरा तथा डॉ अक्तर बानों द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य स्केल का प्रयोग किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या – प्रस्तुत शोध अध्ययन में यू•एस•नगर जिले के खटीमा ब्लॉक में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 10 के 120 विद्यार्थियों { 60 जनजाति (30 बालक व 30 बालिका) एवं 60 गैर जनजाति (30 बालक व 30 बालिका)} का चयन किया गया है। आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान ,मानक विचलन तथा टी–मान का प्रयोग किया गया है।

तालिका – 1

जाति	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का अंभा	टी–मान	सार्थकता स्तर
जनजाति बालक	116	28.044	58	4.05	0.05
गैर जनजाति बालक	144.8	23.898			सार्थकता अन्तर है

तालिका 1 से स्पष्ट है कि टी–मान 4.05 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ,अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है। जनजाति बालकों का मध्यमान 116 गैर जनजाति के मध्यमान 144.8 से कम है । अतः गैर जनजाति बालकों का मानसिक स्वास्थ्य जनजाति बालकों से अच्छा है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका – 2

जाति	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का अंभा	टी–मान	सार्थकता स्तर
जनजाति बालिका	137.9	26.435	58	0.032	0.05
गैर जनजाति बालिका	162.83	62.105			सार्थकता अन्तर नहीं है

तालिका 2 से स्पष्ट है कि टी–मान 0.032 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ,स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ।

तालिका – 3

जाति	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का अंभा	टी–मान	सार्थकता स्तर
जनजाति बालक	130.93	21.37	58	0.178	0.05
जनजाति बालिका	137.9	26.43			सार्थकता अन्तरं नहीं है

तालिका 3 से स्पष्ट है कि टी–मान0.178 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर असार्थक है।अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ,स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ।

तालिका – 4

जाति	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का अंभा	टी–मान	सार्थकता स्तर
गैर जनजाति बालक	144.8	23.89	58	0.073	0.05
गैर जनजाति बालिका	102.83	62.10			सार्थकता अन्तर नहीं है

तालिका 4 से स्पष्ट है कि टी–मान 0.073 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ,स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है ।

अध्ययन के निष्कर्ष –

1– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।

2– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालिकाओं एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ।

3– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति बालकों एवं जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ।

4– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर जनजाति बालकों एवं गैर जनजाति बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं है ।

शैक्षिक निहितार्थ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् जनजाति एवं गैर जनजाति विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे साथ ही सभी बातों को ध्यान में रखकर छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बंधित

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कमजोरियों एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण नीतियों, विधियों एवं शैक्षिक तकनीकों का उपयोग कर उपचारात्मक शिक्षण प्रदान कर सकते हैं जिससे कि छात्र–छात्राओं के शैक्षिक विकास हेतु अच्छे मानसिक स्वास्थ्य एवं सकारात्मक शैक्षिक वातावरण को विकसित किया जा सकता है।

सन्दर्भ –

धर्मेन्द्रपा, एस० एन (2012). अ स्टडी आफ रिलेशनशिप अमंग मेन्टल हेल्थ, इमोशनल इंटेलीजेन्स एंड अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स (पी० एच० डी० शोध प्रबन्ध). डिपार्टमेन्ट ऑफ स्टडीज एण्ड रिसर्च इन एजूकेशन युनिवर्सिटी ऑफ मैसूर, मानस गंगोत्री मैसूर, कर्नाटक ।

नमी, वाई० एवं अन्य (2014). द स्टूडेन्ट्स मेन्टल हेल्थ स्टेटस. प्रोसीडिया–सोशल ऐण्ड विहैविरल साइन्सेस, 114] 840–844– क्रू 1001016/ ربण्ड्रेचतवण20130120794

रेन, वी०एल० (2017). इफेक्ट आफ मेन्टल हेल्थ ऑन स्टूडेन्ट लर्निंग. टी०एल०ए०आर०, 22 (2), 39–58– रिट्राइव ऑन सितम्बर 28 2020 https%//files-eric-ed-gov/fullteÛt/EJ1154566-pdf

सलीम, एस०, महमूद, जे० एवं नाज, एम0 (2013). मेन्टल हेल्थ प्राब्लम्स इन युनीवर्सिटी स्टूडेन्ट्स अ प्रीवेलेन्स स्टडी. एफ० डब्ल्यू०यू० जर्नल ऑफ सोशल साइंसेस, 7(2), 124–130– रिट्राइव ऑन सितम्बर 29 2020 फ्राम पिसमःध्ध्ध्वःध्थ ।त्ड च्ब्ध्ज्ध्क्वूदसवंकेध11– डमदजंस भ्मंसजी च्तवइसमउे पद न्दपअमतेपजल.चकि

साहू, विनीता (2011). अनाथ बच्चों में आत्म–प्रत्यय, मानसिक स्वास्थ्य एवं नियन्त्रणोन्मुखता का एक अध्ययन (पी–एच० डी० शोधप्रबन्ध). वीर बहादुर सिंह पूर्वाचंल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

सिंह, अनीता (2010). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का अध्ययन (पी–एच०डी० शोध प्रबन्ध). डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद (उ०प्र०)।

सिंह, अनुराग (2017). रोल ऑफ इंटलीजेन्स, रेसीलिएन्स ऐण्ड पर्सनालिटी इन मेन्टल हेल्थ ऑफ एडोलसेंट्स (पी–एच०डी० शोधप्रबन्ध). डिपार्टमेन्ट ऑफ साइकाल्जी, फैकल्टी ऑफ सोशल साइन्स, बनारस हिन्दू युनीवर्सिटी, वाराणसी।

Cite Your Article as:

Saroj Joshi. (2024). MADHYAMIK VIDYALAYO MAIN ADHYAYANRAT JANJAATI EVAM GAIR JANJATI KE VIDYARTHIYO KE MANSIK SWASTHYA KA TULNATMAK ADHYAYAN. In Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies (Vol. 12, Number 80, pp. 1–5). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10444125

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies